COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 2, Year: 2025 (July-December)
PP: 42-48

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

डॉ. राममनोहर लोहिया का राजनीतिक चिंतन

डॉ. अंजीत कुमार चौधरी

सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग, आर.बी.जलान, कॉलेज, बेला, दरभंगा

सारांश–

डॉ॰ राममनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के एक मौलिक चिंतक एवं समाजवादी दार्शनिक थे। उनका राजनीतिक चिंतन भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं पर आधारित था। उन्होंने समाजवाद को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप परिभाषित किया तथा सामाजिक न्याय, समानता और स्वतंत्रता को राजनीति का मूल उद्देश्य माना। लोहिया ने जाति-व्यवस्था का विरोध करते हुए पिछड़े वर्गों एवं महिलाओं के अधिकारों की रक्षा की मांग की। "सप्त क्रांति" के माध्यम से उन्होंने सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। "चौखंभा राज्य" की अवधारणा द्वारा उन्होंने सत्ता के विकेंद्रीकरण पर बल दिया। उनके विचारों में गांधीवाद एवं मार्क्सवाद का समन्वय दिखाई देता है, किंतु उन्होंने स्वतंत्र समाजवादी दृष्टिकोण विकसित किया। भाषा, लोकतंत्र, महिला अधिकार एवं सामाजिक न्याय संबंधी उनके विचार आज भी भारतीय राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं। राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के प्रमुख समाजवादी चिंतक, स्वतंत्रता सेनानी तथा सामाजिक न्याय के समर्थक थे। उनका राजनीतिक चिंतन भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं—जाति-भेद, आर्थिक विषमता, लैंगिक असमानता तथा सामाजिक शोषण—पर आधारित था। उन्होंने समाजवाद को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप परिभाषित किया तथा समानता, स्वतंत्रता और लोकतंत्र को राजनीति का मूल आधार माना। डॉ॰ लोहिया जाति-व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे और पिछड़े वर्गों, दलितों तथा महिलाओं को सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकार दिलाने के पक्षधर थे। "पिछड़ा पावे सौ में साठ" का उनका नारा सामाजिक न्याय की भावना को व्यक्त करता है। उन्होंने "सप्त क्रांति" के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वे विकेंद्रीकरण तथा जनभागीदारी के समर्थक थे। "चौखंभा राज्य" की अवधारणा द्वारा उन्होंने ग्राम, जिला, प्रांत और केंद्र के बीच सत्ता संतुलन पर बल दिया। भारतीय भाषाओं के विकास तथा अंग्रेजी के वर्चस्व के विरोध में भी उन्होंने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। उनके चिंतन में महात्मा Gandhi के अहिंसा और ग्राम स्वराज तथा Karl Marx के आर्थिक समानता संबंधी सिद्धांतों का समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार डॉ॰ लोहिया का राजनीतिक चिंतन भारतीय समाजवाद की एक मौलिक एवं व्यावहारिक व्याख्या प्रस्तुत करता है, जो आज भी भारतीय राजनीति और सामाजिक न्याय की अवधारणा को प्रेरित करता है।

प्रस्तावना–

भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा में डॉ. राममनोहर लोहिया का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। वे केवल एक राजनेता ही नहीं, बल्कि मौलिक चिंतक, समाजवादी दार्शनिक, स्वतंत्रता सेनानी तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रबल समर्थक थे। भारतीय राजनीति में समाजवाद को व्यावहारिक धरातल पर स्थापित करने का श्रेय जिन प्रमुख व्यक्तित्वों को जाता है, उनमें डॉ॰ लोहिया अग्रणी हैं। उन्होंने भारतीय समाज की जटिलताओं—

© Copyright @ Authors

जाति, वर्ग, भाषा, लिंग असमानता तथा आर्थिक विषमता—का गहन अध्ययन कर उसके समाधान हेतु वैकल्पिक राजनीतिक दृष्टि प्रस्तुत की।

डॉ० लोहिया का राजनीतिक चिंतन भारतीय परिस्थितियों से गहराई से जुड़ा हुआ था। वे पाश्चात्य समाजवाद के अंधानुकरण के पक्षधर नहीं थे, बल्कि भारतीय संस्कृति, ग्राम व्यवस्था तथा सामाजिक संरचना को ध्यान में रखते हुए समाजवाद का भारतीय स्वरूप विकसित करना चाहते थे। उनके चिंतन में गांधीवाद, मार्क्सवाद तथा भारतीय परंपरा का समन्वित रूप दिखाई देता है। उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना।

लोहिया का राजनीतिक दर्शन समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय पर आधारित था। वे जाति-व्यवस्था को भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या मानते थे और इसके उन्मूलन के लिए निरंतर संघर्षरत रहे। "पिछड़ा पावे सौ में साठ" का उनका नारा सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। महिलाओं, किसानों, मजदूरों तथा वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया।

डॉ० राममनोहर लोहिया : जीवन परिचय–

राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के एक महान समाजवादी चिंतक, स्वतंत्रता सेनानी, प्रखर वक्ता तथा सामाजिक न्याय के समर्थक थे। उनका जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद (वर्तमान अयोध्या) जनपद के अकबरपुर नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता हीरालाल लोहिया राष्ट्रभक्त एवं स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुए व्यक्ति थे। उनकी माता का नाम चंदा देवी था। बाल्यावस्था में ही उनकी माता का निधन हो गया, जिसके कारण उनके व्यक्तित्व में संघर्षशीलता और आत्मनिर्भरता का विकास हुआ।

डॉ० लोहिया के जीवन पर उनके पिता का विशेष प्रभाव पड़ा। उनके पिता महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित थे तथा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रहते थे। बालक राममनोहर भी बचपन से ही देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थे। कहा जाता है कि मात्र दस वर्ष की आयु में उन्होंने पहली बार महात्मा गांधी को देखा और उनके व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित हुए। यही प्रभाव आगे चलकर उनके राजनीतिक जीवन की दिशा निर्धारित करने वाला सिद्ध हुआ।

डॉ० लोहिया की प्रारंभिक शिक्षा अकबरपुर तथा बनारस में हुई। वे अत्यंत मेधावी छात्र थे। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा के लिए वे जर्मनी गए और बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उनका शोध विषय "नमक सत्याग्रह" था, जिसमें उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का आर्थिक एवं राजनीतिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। विदेशी शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उनके मन में भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के प्रति गहरा लगाव बना रहा।

भारत लौटने के बाद डॉ० लोहिया स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हो गए। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े, किंतु शीघ्र ही समाजवादी विचारधारा की ओर आकर्षित हुए। वर्ष 1934 में उन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संगठन का उद्देश्य कांग्रेस के भीतर समाजवादी विचारों का प्रचार-प्रसार करना था। लोहिया का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक समानता भी आवश्यक है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

डॉ० लोहिया ने भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में सक्रिय भूमिका निभाई। अंग्रेजी सरकार ने उन्हें कई बार गिरफ्तार किया और कठोर यातनाएँ दीं, किंतु उन्होंने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। जेल में रहते हुए भी वे लेखन एवं चिंतन का कार्य करते रहे। वे निर्भीक वक्ता थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रबल विरोधी थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद डॉ० लोहिया ने भारतीय राजनीति में समाजवादी आंदोलन को नई दिशा दी। वे सत्ता की राजनीति से अधिक जनहित एवं सामाजिक परिवर्तन की राजनीति में विश्वास रखते थे। उन्होंने जाति-व्यवस्था, आर्थिक विषमता, लैंगिक असमानता तथा भाषाई भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किया। "पिछड़ा पावे सौ में साठ" का उनका नारा सामाजिक न्याय के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डॉ० लोहिया भारतीय भाषाओं के समर्थक थे। वे अंग्रेजी के अत्यधिक प्रभाव को भारतीय लोकतंत्र के लिए हानिकारक मानते थे। उनका विचार था कि शिक्षा एवं प्रशासन मातृभाषा में होना चाहिए, तभी वास्तविक लोकतंत्र स्थापित हो सकेगा। वे हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के विकास के पक्षधर थे।

उनके राजनीतिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण पक्ष "सप्त क्रांति" का सिद्धांत था। इसके माध्यम से उन्होंने स्त्री-पुरुष असमानता, जातिवाद, रंगभेद, आर्थिक शोषण तथा युद्ध की राजनीति के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया। उनका समाजवाद भारतीय परिस्थितियों पर आधारित था, जिसमें गांधीवाद और मार्क्सवाद का समन्वय दिखाई देता है।

डॉ० लोहिया अत्यंत सरल, सादगीपूर्ण एवं संघर्षशील जीवन जीते थे। वे जनता के नेता थे और सदैव गरीबों, किसानों, मजदूरों तथा वंचित वर्गों की आवाज उठाते रहे। उन्होंने राजनीति को सेवा का माध्यम माना। वे मानते थे कि लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय और समान अवसर पहुँचे।

12 अक्टूबर 1967 को नई दिल्ली में उनका निधन हो गया। यद्यपि वे आज हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी उनके विचार भारतीय राजनीति और समाज के लिए आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। सामाजिक न्याय, समानता, लोकतंत्र एवं समाजवाद के क्षेत्र में उनका योगदान भारतीय इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।

डॉ० लोहिया का राजनीतिक चिंतन–

राम मनोहर लोहिया भारतीय राजनीति के ऐसे मौलिक चिंतक थे जिन्होंने समाजवाद को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप नई दिशा प्रदान की। उनका राजनीतिक चिंतन सामाजिक न्याय, समानता, स्वतंत्रता तथा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित था। वे राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का साधन मानते थे। डॉ० लोहिया का समाजवाद भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक संरचना से जुड़ा हुआ था। वे पाश्चात्य समाजवाद के अंधानुकरण के विरोधी थे। उनका मानना था कि भारत की समस्याओं का समाधान भारतीय परिस्थितियों के अनुसार ही संभव है। उन्होंने आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता तथा सामाजिक शोषण को भारतीय समाज की प्रमुख समस्याएँ माना। लोहिया जाति-व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। उनके अनुसार भारतीय समाज में वर्ग-संघर्ष से अधिक गंभीर समस्या जाति-संघर्ष की है। उन्होंने पिछड़े वर्गों, दलितों एवं महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। "पिछड़ा पावे सौ में साठ" का उनका प्रसिद्ध नारा सामाजिक न्याय की अवधारणा को स्पष्ट करता है। डॉ० लोहिया ने "सप्त क्रांति" का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो उनके राजनीतिक चिंतन का मूल आधार माना जाता है। इसमें उन्होंने स्त्री-पुरुष असमानता, जाति-भेद, रंगभेद, आर्थिक शोषण, विदेशी प्रभुत्व, युद्ध तथा मानसिक

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

दासता के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया। उनका उद्देश्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना था जहाँ सभी व्यक्तियों को समान अवसर प्राप्त हों।

वे लोकतंत्र एवं विकेंद्रीकरण के समर्थक थे। उन्होंने "चौखंभा राज्य" की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें ग्राम, जिला, प्रांत एवं केंद्र को शासन के चार स्तंभ माना गया। उनका विश्वास था कि सत्ता का अत्यधिक केंद्रीकरण लोकतंत्र को कमजोर करता है। इसलिए वे स्थानीय स्वशासन एवं जनभागीदारी पर बल देते थे।

डॉ० लोहिया भारतीय भाषाओं के समर्थक थे तथा अंग्रेजी के वर्चस्व का विरोध करते थे। उनका मानना था कि मातृभाषा में शिक्षा एवं प्रशासन से ही वास्तविक लोकतंत्र स्थापित हो सकता है। उनके राजनीतिक विचारों में महात्मा गांधी के अहिंसा एवं ग्राम स्वराज तथा Karl Marx के आर्थिक समानता संबंधी सिद्धांतों का समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार डॉ० लोहिया का राजनीतिक चिंतन भारतीय समाजवाद की एक विशिष्ट एवं व्यावहारिक व्याख्या प्रस्तुत करता है, जो आज भी सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

2. जाति-व्यवस्था का विरोध–

लोहिया भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था को सबसे बड़ी बाधा मानते थे। उनका मानना था कि भारत में वर्ग-संघर्ष से अधिक महत्वपूर्ण जाति-संघर्ष है। उन्होंने जाति के आधार पर होने वाले भेदभाव का तीव्र विरोध किया।

उन्होंने पिछड़े वर्गों, दलितों तथा महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने की मांग की। "सौ में साठ" का सिद्धांत इसी विचारधारा का परिणाम था। उनका विश्वास था कि जब तक पिछड़े वर्गों को पर्याप्त अवसर नहीं मिलेंगे, तब तक सामाजिक न्याय स्थापित नहीं हो सकता।

3. सप्त क्रांति का सिद्धांत–

डॉ० लोहिया का "सप्त क्रांति" सिद्धांत उनके राजनीतिक चिंतन का केंद्रीय तत्व है। इसमें उन्होंने सात प्रकार की असमानताओं एवं अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया—

- स्त्री-पुरुष असमानता के विरुद्ध संघर्ष
- जाति-व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष
- रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष
- विदेशी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष
- निजी पूंजी एवं आर्थिक विषमता के विरुद्ध संघर्ष
- हथियारों एवं युद्ध की राजनीति के विरुद्ध संघर्ष
- मानसिक दासता एवं अन्याय के विरुद्ध संघर्ष

यह सिद्धांत केवल राजनीतिक परिवर्तन तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रांति का भी संदेश देता है।

© Copyright @ Authors

4. चौखंभा राज्य की अवधारणा–

डॉ० लोहिया विकेंद्रीकरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने "चौखंभा राज्य" की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें शासन के चार स्तंभ—ग्राम, जिला, प्रांत एवं केंद्र—निर्धारित किए गए। उनका मानना था कि सत्ता का अत्यधिक केंद्रीकरण लोकतंत्र के लिए घातक है। वे ग्राम स्वराज की भावना को मजबूत करना चाहते थे। उनके अनुसार लोकतंत्र तभी सफल होगा जब स्थानीय स्तर पर जनता की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो।

5. भाषा संबंधी विचार–

लोहिया अंग्रेजी के वर्चस्व के विरोधी थे। वे भारतीय भाषाओं के विकास के पक्षधर थे और मानते थे कि अंग्रेजी भाषा भारत में सामाजिक विषमता को बढ़ाती है। उन्होंने हिंदी सहित भारतीय भाषाओं को प्रशासन एवं शिक्षा का माध्यम बनाने की मांग की। उनका मानना था कि जब तक शिक्षा मातृभाषा में नहीं होगी, तब तक वास्तविक लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सकता। भाषा के प्रश्न को उन्होंने सांस्कृतिक स्वतंत्रता से जोड़कर देखा।

6.गांधीवाद और मार्क्सवाद का समन्वय–

डॉ० लोहिया ने गांधीवाद एवं मार्क्सवाद दोनों से प्रेरणा ली। गांधी से उन्होंने अहिंसा, सत्याग्रह एवं ग्राम स्वराज की भावना ग्रहण की, जबकि मार्क्सवाद से आर्थिक समानता एवं शोषण-विरोध का दृष्टिकोण लिया।

किन्तु वे दोनों विचारधाराओं के अंधानुकरण के विरोधी थे। उन्होंने भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप समाजवाद की नई व्याख्या प्रस्तुत की। उनका मानना था कि भारत की समस्याओं का समाधान भारतीय दृष्टिकोण से ही संभव है।

7. लोकतंत्र संबंधी विचार–

लोहिया लोकतंत्र को केवल चुनाव तक सीमित नहीं मानते थे। उनके अनुसार लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ सामाजिक एवं आर्थिक समानता है। यदि समाज में आर्थिक विषमता बनी रहे तो राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं रह जाता। वे जनभागीदारी, विकेंद्रीकरण तथा वैचारिक स्वतंत्रता के समर्थक थे। उन्होंने विपक्ष की भूमिका को लोकतंत्र के लिए अनिवार्य माना।

8. महिला सशक्तिकरण संबंधी विचार–

डॉ० लोहिया महिलाओं की समानता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने भारतीय समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति पर चिंता व्यक्त की और उन्हें राजनीति एवं समाज में समान अवसर देने की मांग की। उनके अनुसार स्त्री-पुरुष समानता के बिना समाजवाद अधूरा है। सप्त क्रांति में भी उन्होंने महिला मुक्ति को प्रमुख स्थान दिया।

डॉ० लोहिया के राजनीतिक चिंतन की प्रासंगिकता–

आज के भारत में डॉ० लोहिया का राजनीतिक चिंतन अत्यंत प्रासंगिक है। सामाजिक न्याय, पिछड़ों का प्रतिनिधित्व, महिला सशक्तिकरण, विकेंद्रीकरण तथा भाषाई समानता जैसे प्रश्न आज भी भारतीय राजनीति के केंद्र में हैं। जातीय असमानता, आर्थिक विषमता तथा राजनीतिक केंद्रीकरण की समस्याएं आज भी विद्यमान हैं। ऐसे में लोहिया का समाजवादी दृष्टिकोण नई दिशा प्रदान करता है। वर्तमान समय में सामाजिक न्याय की राजनीति पर उनका गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

© Copyright @ Authors

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ० राममनोहर लोहिया का राजनीतिक चिंतन भारतीय लोकतंत्र एवं समाजवाद की अमूल्य धरोहर है। उन्होंने भारतीय समाज की समस्याओं का गहन विश्लेषण कर उनके समाधान हेतु व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका चिंतन केवल सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए सक्रिय संघर्ष पर आधारित था। लोहिया ने सामाजिक न्याय, जाति उन्मूलन, महिला समानता तथा आर्थिक विषमता के विरुद्ध जो विचार प्रस्तुत किए, वे आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। भारतीय राजनीति में पिछड़े वर्गों की भागीदारी तथा सामाजिक न्याय की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी राजनीति सत्ता-केंद्रित न होकर जन-केंद्रित थी। वे लोकतंत्र को जनता की सहभागिता एवं सामाजिक समानता से जोड़कर देखते थे। वर्तमान समय में जब राजनीति में नैतिक मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है, तब लोहिया का वैचारिक दृष्टिकोण अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार डॉ० राममनोहर लोहिया का राजनीतिक चिंतन भारतीय समाज एवं राजनीति के लिए प्रेरणास्रोत है तथा भविष्य में भी सामाजिक परिवर्तन की दिशा में मार्गदर्शक बना रहेगा।

संदर्भ सूची–

1. लोहिया, राममनोहर — मार्क्स, गांधी और समाजवाद।
2. लोहिया, राममनोहर — इतिहास चक्र।
3. लोहिया, राममनोहर — सप्त क्रांति।
4. अवस्थी, ए.पी. — भारतीय राजनीतिक विचारक।
5. शर्मा, प्रभुदत्त — डॉ० राममनोहर लोहिया का राजनीतिक दर्शन।
6. सिंह, रामवृक्ष — भारतीय समाजवाद और लोहिया।
7. जैन, एम.पी. — भारतीय राजनीतिक चिंतन।

© Copyright @ Authors